ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

हरिशंकर परसाई के निबंधों में सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता

Pawan Kumar student m.a hindi JRF hindi

प्रस्तावना :-

"साहित्य समाज का आईना होता है" यह उक्ति चरितार्थ करती है की किसी साहित्य को पढ़कर युगीन, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों का अंदाजा लगाया जा सकता है। साहित्य समाज को और समाज साहित्य को प्रभावित करता है।साहित्यकार अपने समाज का पथ प्रदर्शक होता है। वह अपने ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए निबंध, उपन्यास, कविता, कहानी आदि के माध्यम से समाज के अच्छे कार्यों की प्रशंसा एवं विषमताओं का विरोध करता है। अन्य विधाओं की अपेक्षा निबंध यथार्थ के अधिक नजदीक होते हैं जिनमें साहित्यकार भावाभिव्यक्ति करते हुए मनोरंजक और उपदेशक का कार्य निर्वहन करता है।

हरिशंकर जी का जीवन गरीबी में बीता। इस कारण उनका समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ उठना बैठना था। दबे कुचले पीड़ित वर्ग और पूंजीपति वर्ग द्वारा सताए मध्यम और निम्न वर्ग के जीवन की सच्चाई के साक्षी थे। हरिशंकर जी ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक,शैक्षिक और राजनैतिक परिस्थितियों की गहराई से विवेचना की और वास्तविक स्थिति से समाज को अवगत करवाया। हरिशंकर परसाई ने उपन्यास, कहानी, निबंध और व्यंग्य लेख आदि के माध्यम से समाज को आईना दिखाया। स्वतंत्रता के पश्चात नेताओं की कथनी और करनी में अंतर आ गया और राजनीति निरंतर भ्रष्टाचार की दलदल में फंस गई। सिद्धांत और नारे अर्थहीन हो गए। समाज में फैले छल–कपट, लूट–पाट, पाखंड, आडंबर, झूठ–फरेब, द्वेष, ईर्ष्या, संप्रदायिक दंगे, जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, कालाबाजारी, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति, जाति प्रथा, पर्दा प्रथा, आदि विषयों को केंद्र में रख कर परसाई जी ने निबंधों की रचना की।

परसाई जी हास्य-व्यंग्य के जिंदादिल निबंधकार थे। जिन्होंने निबंधों को आत्माभिव्यक्ति के दायरे से निकालकर उसे समाजवाद से जोड़ने का प्रयास किया। जाति प्रथा समाज की एक ऐसी घिनौनी विसंगति है जो इंसान को इंसान से अलग कर देती है। जाति ही समाज में उसकी हैसियत का प्रमाण पत्र होता है। हरिशंकर परसाई के समय में उच्च और निम्न जाति का टकराव चरम पर था। हरिशंकर परसाई स्वयं ब्राह्मण जाति से संबंधित है परंतु जातिगत भेदभाव को मिटा देना चाहते थे। प्रेम की बिरादरी, हरिजन को पीटने का यज्ञ, ऊंची जातियों का आरक्षण आदि निबंधों में हरिशंकर परसाई ने जाति प्रथा का घोर विरोध किया है।

हरिशंकर परसाई का स्त्री विमर्श भी सराहनीय है। उन्होंने नारी के जीवन में आने वाली समस्याएं को अपने निबंधों में उठाया नारी के अधिकारों की मांग की।

"एक लड़की 5 दीवाने" निबंध में परसाई जी ने नारी के साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर कटाक्ष करते हुए लिखते है "लोग 12-13 साल की बच्ची को घूर घूर कर जवान बना देते हैं।"**(1)** स्त्रियों की सुरक्षा एक गंभीर समस्या है जिसको मुहैया करवाने की भरपूर कोशिश की जाती है। बलात्कार, चेहरे पर तेजाब फेंकना, सामूहिक छेड़छाड़, स्कूल कॉलेजों में बदतमीजी, रास्ते पर चलती लड़कियों की शारीरिक बनावट, उनकी वेश भूषा पर टिप्पणी जैसी निंदनीय घटनाएं समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं जिनका सामना महिलाएं करती हैं। तीन साल की बच्ची हो या कोई प्रौढ़ महिला सभी महिलाएं किसी न किसी रूप में पुरूषों के दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं। वर्तमान समाज को हरिशंकर परसाई के निबंध से सीखने की जरूरत है कि महिलाएं पैर की जूती या कोई उपभोग वस्तु नहीं। उन्हें भी अधिकार है, जीवन जीने का, अपनी मर्जी के वस्त्रों को धारण करने का, अपनी पसंदीदा जगहों पर घूमने का अगर किसी को बदलने की जरूरत है तो पुरुष को अपनी रूढ़िवादी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है।

"बाजार भाव का पति" निबंध में वर्षों से चली आ रही दहेज प्रथा को उठाया।परसाई जी व्यंग्य शैली में दहेज प्रथा का विरोध करते हैं। वर्तमान समय में भी दहेज प्रथा जैसी विसंगति समाज में विद्यमान हैं जो अनेकों महिलाओं की जान ले लेती है। गरीब परिवार की लड़कियों की दहेज न दे पाने के कारण उन्हें घर से निकाल दिया जाता है या उन्हें जला दिया जाता है।

"साहित्य और नंबर दो का कारोबार" निबंध में हरिशंकर परसाई जी ने साहित्यकारों की कारगुजारी का वर्णन बड़ी रोचक ढंग से किया है। शिकायत मुझे भी है और मां और भाई आदि निबंधों में बेरोजगारी की समस्या उजागर किया गया है। जिसमें पढ़े-लिखे नौजवानों नौकरी की तलाश में संपूर्ण जीवन इधर से उधर सिर्फ घूमते रहते हैं परंतु रोजगार कहीं नहीं मिलता। वर्तमान समय में भी बेरोजगारी एक बहुत बड़ी समस्या है जिसका हल नौजवान भारत को ऊंचाइयों पर ले जा सकता है।

हिंदी फिल्म जगत भी परसाई जी की पैनी नजर से बच नहीं सका। "फिल्मी रोमांच" निबंध में सामाजिकता के नाम पर जो अश्लीलता जनता को परोसी जा रही उस की कड़े शब्दों में घोर निंदा की। यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो फिल्मी जगत ज्यों का त्यों ही है।आज भी फिल्मों मनोरंजन के नाम पर समाज को असभ्य और अश्लीलता का नंगा नाच दिखाया जा रहा है।

'वैष्णव की फिसलन'' निबंध में आधुनिक होटलों में मांस मदिरा के सेवन और बार डांसर और वेश्यावृत्ति की समस्याओं उठाया है। 'अकाल उत्सव' निबंध में दर्शाया गया है की इंजीनियर, तहसीलदार, विधायक आदि सब गिद्धों की भांति तैयार बैठे हैं गरीब की दो वक्त की रोटी छीन कर खाने को। पूंजीपति वर्ग अकाल में भी अपना फायदा देखते है और उसे उत्सव की तरह मनाते हैं। परसाई जी पूंजीवादी सामंतवादी संस्कृति का विरोध और समाजवादी जीवन मूल्यों के पक्षधर थे। हरि शंकर जी ने महंगाई की समस्या का कारण कालाबाजारी और मुनाफाखोरी को माना है

बच्चों का अलाउंस निबंध में हरिशंकर परसाई ने जनसंख्या वृद्धि के मुद्दे को उठाया है जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है। जनसंख्या निरंतर बढ़ने से संसाधनों की कमी भविष्य में चिंता का विषय बन रही है।जनसंख्या वृद्धि, मध्यमवर्गीय व्यक्ति की आवाज समस्या, गरीबी की समस्या, महंगाई और कालाबाजारी, भुखमरी की समस्या, आर्थिक विषमता, निम्न वर्ग का शोषण, महिलाओं का शोषण– बलात्कार, अधिकारों का हनन, वेश्यावृत्ति, दहेज प्रथा, अपहरण, जाति प्रथा, मिल मजदूरों की समस्याएं आदि अनेक समस्याएं वर्तमान समाज में भरी पड़ी है इसलिए हरिशंकर परसाई के निबंध वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिक है।

हरिशंकर परसाई जी सरकारी और प्राइवेट स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्य किया। जहां उन्होंने शिक्षा की कमियों, शिक्षकों के साथ होने वाले अन्याय, अधिकारों के हनन, वेतन विषमता एवं आधुनिक सुविधाओं के का अभाव आदि को जांचा परखा एवं इन विषयों को आधार बनाकर कुछ शैक्षिक निबंध लिखें। परसाई जी का समय हो या वर्तमान समय शिक्षा संबंधी विषमताएं ज्यों की त्यों बनी हुई है। शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। प्राइवेट स्कूलों में अभिभावकों को शिक्षा के नाम पर लूटा जा रहा है। प्राइवेट स्कूलों में नियुक्त शिक्षक भी न्यूनतम योग्यता को पूरा नहीं कर पाते। इनमें शिक्षकों से अधिक काम लिया जाता है और वेतन कम दिया जाता है। सरकारी विद्यालयों में भ्रष्टाचार के माध्यम से सिफारशी शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है। यह देश का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों के लिए दयनीय स्थिति का परिचायक होगी

परसाई जी द्वारा रचित "प्राइवेट कॉलेज का घोषणा पत्र" और "परीक्षा और पतझड़" आदि निबंधों में शैक्षिक विषमताओं के प्रति उनकी आक्रोशमयी प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं।। शिक्षा को व्यवसाय समझने वाले अध्यापकों की फजीहत की और शिक्षा प्रणाली को कटघरे में खड़ा कर दिया। हरिशंकर परसाई के समस्त निबंधों में एक तिहाई निबंधों का विषय राजनीति से लिया। राजनीति का ऐसा कोई विषय नहीं जिसको हरिशंकर परसाई ने छुआ ना हो।

राजनीति गांजा, राजनीति की नौटंकी, जांच कमीशन सरकार का कुल्ला, तुसी हुकुम करो जी, राजनीति पुंगी, ठिठुरता हुआ गणतंत्र आदि निबंधों में हरिशंकर जी ने राजनीतिक विसंगतियों, विधायकों के आचरण, राजनीतिज्ञ के स्वार्थी पन का उद्‌घाटन किया। उन्होंने व्यंग्य शैली में राजनीतिक व्यवस्था का तीखे स्वर में विरोध किया। वे शुद्ध राजनीति को मानवीय संस्कृति का अंग मानते हैं। परंतु तत्कालीन राजनीतिज्ञ के झूठे वादों, अतिशय विनम्रता का स्वांग पूर्ण आचरण आमजन के लिए दारुण और कष्टकारी मानते हैं। परसाई के निबंधों में समवर्ती राजनीति व्यवस्था के जीवंत दस्तावेज है। वे यथार्थ के परिपेक्ष्य में राजनीतिक शक्तियों के दुरुपयोग, सत्ता स्वार्थ, भ्रष्टाचार, कुर्सी प्रेम, दल बदल की नीति आदि विषयों का चित्रण करते हैं।

"सरकार को कोई समस्या हल करनी नहीं है। उसके वश की बात नहीं है। जब समस्या हल न करनी हो या वह हल न होती हो तो कमीशन बिठा दो। भूखा रोटी मांगता हो तो उसको कहो– मुंह खोल। वह मुंह खोले तो उसमें कमीशन डाल दो–ले जिंदगी भर जुगाली करता रह।"(2)

देश को गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, भुखमरी, युद्धों में धकेलने वाले राजनेता गण ही है। देश के सबसे बड़े शोषक वर्ग का परसाई जी बड़े ही आवेगमयी शैली में उनका नकली मुखौटा उतार फेंकते हैं।और जनता के समुख राजनेताओं की वास्तविकता का भेद खोलते हैं। कांग्रेसी और जनता पार्टी जैसे राजनीतिक दलों की अच्छाइयों बुराइयों पर व्यंग्य कसते हैं।परसाई जी राजनीति पर व्यंग्य कसने के मंतव्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति वोट देता है उसे अधिकार है राजनीतिक व्यवस्था पर प्रश्न करने का।

"**दर्द ही दवा**" निबंध में परसाई जी ने राजनीतिक दल जनता पार्टी की परिस्थितियों का गहराई से विवेचन किया। सत्ता का मोह किसे नहीं होता इंद्र सत्ता के लिए कितनी अप्सराओं से कितने तपस्वियों की साधना भंग करवा चुका है।

"बेचारा भ्रष्टाचार" निबंध में परसाई जी भ्रष्टाचार में लिप्त राजनेताओं स्वार्थीपन को उजागर किया है। देश हित के नाम पर राजनेताओं द्वारा करोड़ों रुपए का घोटाला कर दिया जाता है।देश में अनेक ऐसी योजनाएं है जो जरूरतमंद जनता तक नहीं पहुंच पा रही। इसका लाभ मुनाफाखोर या विचोलिए ही उठा रहे है।"राजनीति की नौटंकी" में परसाई जी ने हास्य व्यंग्य शैली में राजनेताओं की नौटंकी को उद्‌घाटित किया है और उनके आचरण पर सवालिया निशान दागे है। हरिशंकर परसाई के निबंध अपने मूल्यों उद्देश्यों और अर्थों को समेटे हुए आज भी उतने ही मूल्यवान है जितने अपने समय में लोकप्रिय थे और उन्होंने व्यवस्था का व्यंग्य शैली में विरोध किया और आज के साहित्यकारों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

उपसंहार:-

भारत एक विशाल भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विरासत वाला देश है जिसमें विभिन्न धर्मों जातियों और विभिन्न भाषाएं बोलने वाले लोग रहते हैं। समाज में भी अनेक प्रकार की विसंगतियां पाई जाती हैं जिनका समय-समय पर निवारण हो जाना आवश्यक है वरना वह एक कोढ. की भांति समाज की जड़ों को गला देंगी।हरिशंकर परसाई में कबीरदास और प्रेमचंद व्यक्तित्व दिखाई देता है। उनकी भांति ही सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था का निर्भयता से विरोध किया। प्रेमचंद की तरह समाज के प्रत्येक वर्ग से अपने साहित्य को जोड़ते हुए प्रगतिशील मूल्यों की परंपरा को आगे बढ़ाया। वर्तमान समय में भी परसाई जी के निबंध उतने ही प्रासंगिक है जितने बीसवीं सदी में थे। सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक व्यवस्था में भले ही बदलाव हो गया परंतु स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। हरिशंकर परसाई के निबंध आज से 50–60 पहले लिखे गए थे परंतु आज के दौर में सटीक और वाजिब है। यदि कोई रचना प्रासंगिक ना हो तो उसका महत्व कम हो जाता है और वह रचना किसी पुस्तकालय के कोने में पड़ी रहती है।आधुनिक हिंदी निबंधों को नई दिशा देने वाले हरिशंकर परसाई जी ने भाव पक्ष और कला पक्ष में सौंदर्य बोध परिचय दिया है। स्वतंत्रता के पहले लोगों ने जो सुनहरे संसार के स्वपन सजाए थे स्वतंत्रता के पश्चात उनका मोहभंग हो गया। देश गरीबी, बदहाली, आर्थिक विपन्नता, बेरोजगारी, किसानों की दुर्दशा, अकाल आदि में उलझ कर रहा है। हरिशंकर परसाई ने हास्य व्यंग्य शैली में सरकार की नाकामियों को उजागर किया सामाजिक शैक्षिक और राजनीतिक विसंगतियों का विरोध निर्भीकता के साथ करना चाहिए और अपने साहित्यकार होने का कर्तव्य निभाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ:-

१. दो नाक वाले लोग, हरिशंकर परसाई, निबंध एक लड़की 5 दीवाने,पृष्ठ संख्या18
२. परसाई रचनावली ,कमला प्रसाद संपादक, खंड 3